शिक्षक दिवस विशेषांक

पेड़, पशु, प्रकृति, पदार्थ को शिक्षक बतौर प्रणाम

-डॉ. रमेश
कुमार टण्डन

आज तक जितने भी दिवस मैंने मनाया है, सभी किसी न किसी मनुष्य के जन्म दिवस को लेकर ही रहा है या किसी शुरूआत को लेकर रहा है. क्या मनुष्य की जिंदगी में सिर्फ मनुष्य ही महत्त्वपूर्ण है; कोई वस्तु, पशु, पक्षी, नदी या पर्वत नहीं; जिनसे मनुष्य ने कुछ प्रेरणा ली हो ? किसी अच्छे मनुष्य को देखते समय या उससे कुछ सीखते समय उसकी सिर्फ अच्छाई को हमें दिखाया जाता है या श्रेष्ठ बनने की ललक में, नाम कमाने की इच्छा में, ऊँचा उठने की कोशिश में वह खुद अच्छा बनता है या दिखता है. वास्तव में वह पूरी तरह अच्छा नहीं रहता. सम्पत्ति बंटवारे के समय अपने भाई के साथ, जमीन का अधिकार छिनते समय बहन के प्रति, बच्चों की लड़ाई में पड़ोस के साथ, आतंरिक परीक्षा में अंक कम आने पर अपने विषय शिक्षक के साथ, बुढ़ापा में माँ बाप के साथ, सब्जी का स्वाद अच्छा नहीं आने पर पत्नी के साथ, अपने प्यार से उम्मीद टूटने पर, राशन की लम्बी पंक्ति में दूर खड़े रहने के कारण विक्रेता के साथ, अपने पद के अनुरूप महत्त्व नहीं मिलने पर, बैंक में देर तक पंक्ति में खड़े रहने के बाद जब खुद की बारी आए उस समय बैंक के काउंटर कर्मचारी का लंच ब्रेक हो जाने पर, मोटर साइकिल में टंकी फूल करवाए हो लेकिन खुद चलाने के लिए निकालते समय यह पता चले कि पुत्र ने पेट्रोल खतम कर दिया हो तब... और इसी प्रकार अनेक मौके पर वह बुरा बन जाता है. तब क्या उसकी जयकारा की जाए ? क्या उसकी जयंती मनाई जाए ? जिसमें कोई भी दोष न हो, हर परिस्थिति में प्रेरित करने का गुण रखता हो; मेरे विचार से वही पूजनीय है और जयंती मनाने योग्य है।

कई बार किसी पशु या पक्षी के आपसी व्यवहार से हम बहुत कुछ सीखते हैं या यह कह सकते हैं कि वे अनजाने में हमें शिक्षा दे जाते हैं. कई बार ऐसा होता है कि कोई मनुष्य हमें प्रेरित करने के लिए ही हमारे सामने उत्कृष्ट व्यवहार करता है, बाकी समय आदतन सामान्य या निकृष्ट व्यवहार करता है. परन्तु पशु झ पक्षियों के मामले में ऐसा नहीं होता. वे हमेशा और आदतन अच्छे ही व्यवहार करते हैं, किसी के सामने अच्छा बनने के लिए अच्छा व्यवहार नही करते. बन्दर, हाथी, कुत्ते, बिल्ली या कोई भी पशु या कोई भी पक्षी हो; उनके व्यवहार को हम ध्यान से देखें और समझें,

तो वे हमारे श्रेष्ठ शिक्षक हो सकते हैं. वे हमें अनजाने में या आदतन व्यवहार करते हुए सिखाते ही नहीं, बल्कि खुद उस कार्य को करके हमें बताते हैं. बस हमारी पात्रता सीखने की होनी चाहिए, वे बिना भुगतान के हमारे शिक्षक होंगे।

इसी तरह किसी वस्तु को ही ले लीजिए. उदहारण के लिए कलम. उससे लिखते रहिए, लिखते रहिए. लगातार लिखते रहिए. कभी कुछ नहीं बोलेगी. कभी नहीं थकेगी. मिट्टी की ही बात करें, जितना हल चलाएंगे. परेशान करेंगे, उतनी ही वह अच्छी फसल देगी. पेड़ का भी जितना दमन करोगे, काटोगे; उसी अंग से नयी-नयी शाखाएं निकलती हैं. जिस प्रकार गर्मी की ऋतु में पेड़ के पत्ते झड़ जाते हैं और वर्षाकाल आते ही मनभावन नए कोपलें वहां से निकलने लगती हैं. उसी प्रकार कोई व्यवधान आने पर यदि हम मंजिल की राहों में किसी जगह रुक जाते है तो समय अनुकूल होने पर वहीँ से क्या हम फिर आगे नहीं बढ़ सकते ? जरुर बढ़ सकते हैं. आम या कोई भी फलदार पौधे को देखने से पता चलता है कि जब पौधे छोटे होते हैं, कम फल देने की क्षमता रखते हैं, अगले वर्ष पहले की तुलना में अधिक फल देने की पात्रता विकसित कर लेते हैं. अगले वर्ष और अधिक फल देने की क्षमता रख पाने में सक्षम हो जाते हैं. उसी प्रकार मनुष्य भी किसी परीक्षा की तैयारी करने के दौरान प्रथम वर्ष कुछ ही तथ्यों को दिमाग में रख पाता है, अगले वर्षों में धीरे धीरे अधिक से अधिक जानकार बनते जाता है. जो मनुष्य थोड़े से ज्ञान प्राप्त करने के बाद थक कर हार जाता है, वह सफल नहीं हो पाता और पेड़ रूपी शिक्षक से कुछ भी ग्रहण नहीं कर पाया।

क्या आपने किसी नदी को रुकते देखा है ? वह आगे बढ़ने का सतत प्रयत्न करती है और एक दिन सागर में जाकर मिल जाती है. मैं यही बात पी एस सी की तैयारी करने वालों से पूछना चाहता हूँ कि क्या आपने नदी को अपना शिक्षक माना ? कुछ वर्ष तैयारी करने के बाद क्यों निराश हो जाते हो. जब तक मंजिल नहीं मिल जाती, तब तक लगातार आगे क्यों नहीं बढ़ते?

मनुष्य को इन सभी क्रिया-कलापों से सीखना चाहिए. यदि नहीं सीख पाया, तो उसमें सीखने की उसी प्रकार पात्रता ही नही, जिस प्रकार उल्टे रखे बर्तन में कितना ही पानी डालो, वह एक बूंद भी संचित नहीं रख पाता. मनुष्य तो वही शिक्षा देता है, जो उसने किताबों से पढ़ा-सीखा. मनुष्य को शिक्षा बांटने के बदले कुछ धनराशि चाहिए, यहाँ स्वार्थ है. परन्तु पेड़, पशु, पक्षी, पदार्थ, नदी, पर्वत आदि से सीख प्राप्त करने के लिए कोई धनराशि व्यय करने की जरुरत नहीं होती. यही वातावरण और प्रकृति हमारे सच्चे शिक्षक हैं, जिनसे हमें ज्ञान प्राप्त होता है. बस हमें शिक्षा प्राप्त करने की पात्रता विकसित करने की जरुरत है. इसीलिए आज पांच सितम्बर को डॉ सर्वपल्ली राधाकृष्णन को नमन करने के साथ-साथ, समस्त चर झ अचर, जीव, पौधे, प्रकृति, वस्तुओं को शिक्षक बतौर प्रणाम करता हूँ।